भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

7 मई 2013

आदर्श कम्युनिस्ट, मार्क्सवादी अध्यापिका और वीरांगना
कामरेड महिता (लक्ष्मी) को दण्डकारण्य का लाल जोहार!

29 अप्रैल 2013 के दिन भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) ने अपनी एक महत्वपूर्ण और वरिष्ठ महिला नेता को खो दिया। उस दिन कामरेड गड्डम लक्ष्मी ने जानलेवा मलेरिया से ग्रस्त होकर अपने प्राण गंवाए। वह पिछले 32 सालों से देश की मुक्ति के लिए समर्पित होकर दृढ़ता से काम कर रही थीं। उनका ठीक से इलाज कर उन्हें बचाने के लिए साथियों और नेतृत्व की ओर से की गई तमाम कोशिशें नाकाम हो गईं। सबको शोक में डुबोते हुए उन्होंने जनता के बीच ही अंतिम सांस ली। पार्टी कतारों में 'महिता' के नाम से सुपरिचित कामरेड लक्ष्मी अपनी शहादत के समय पार्टी में राज्य स्तरीय नेतृत्वकारी कैडर के रूप में तथा सेंट्रल रीजियन मार्क्सवादी राजनीतिक पाठशाला की अध्यापिका के रूप में दण्डकारण्य, उत्तर तेलंगाना और आंध्र–ओड़िशा बार्डर जोन के क्रांतिकारी संघर्ष में अपना अनमोल योगदान दे रही थीं। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी उन्हें पूरी विनम्रता से श्रद्धांजलि पेश करती है। उनके उच्च आदर्शों और अधूरे लक्ष्यों को पूरा करने की शपथ लेती है। और उनकी मौत की खबर से शोकसंतप्त हुए उनके परिवारजनों, दोस्तों और साथियों के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करती है।

महान तेलंगाना सशस्त्र किसान संघर्ष का मजबूत गढ़ रहा नलगोण्डा जिला, कोदाडा मण्डल के गांव कंदिबण्डा में कामरेड लक्ष्मी का जन्म हुआ था। उनकी शिक्षा–दीक्षा क्रांति का क़िला माने जाने वाले वरंगल जिला में हुआ था। उस समय के आदर्शपूर्ण क्रांतिकारी नेता कामरेड् पुलि अंजन्ना, गोपगानि आइलैया जैसे महान कामरेडों के मार्गदर्शन में उन्होंने रैडिकल छात्र संगठन में काम किया था। उसी क्रम में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में उभरी थीं। कई बार वह पुलिस के हाथों गिरफ्तार भी की गई थीं। व्यक्तिगत जीवन में भी उन्हें उतार–चढ़ावों का सामना करना पड़ा। कई मुश्किलों और नुकसानों के बीच एक वरिष्ठ कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने लम्बे समय तक उत्तर तेलंगाना, आंध्रप्रदेश और आंध्र–ओड़िशा बार्डर जोन में कई जिम्मेदारियों का निर्वाह कर खासा अनुभव हासिल किया। छात्र आंदोलन की कार्यकर्ता से शुरू कर विभिन्न तकनीकी और सांगठनिक कार्यों में भाग लेने वाली कामरेड महिता ने पार्टी के विकास में अपने हिस्से का योगदान दिया। 'क्रांति के बिना महिला मुक्ति संभव नहीं और महिला के बिना क्रांति की जीत संभव नहीं' कहकर उन्होंने क्रांतिकारी आंदोलन में महिला मोर्चे के विकास के लिए विशेष योगदान किया। पार्टी द्वारा जारी महिला परिप्रेक्ष्य को उन्होंने कैडरों को पढ़ाया, बल्कि उसे समृद्ध बनाने में भी उनका योगदान रहा।

2008 के आखिर से कामरेड महिता का जीवन दण्डकारण्य संघर्ष से जुड़ गया। पार्टी को सैद्धांतिक व राजनीतिक रूप से मजबूत बनाने के महान लक्ष्य के अंतर्गत उन्होंने मार्क्सवादी शिक्षण देने वाली अध्यापिका के रूप में दण्डकारण्य में कदम रखा। हालांकि जिम्मेदारियों के अनुसार वह विभिन्न राज्यों का दौरा करती रहीं, लेकिन यह कहा जा सकता है कि उस समय से दण्डकारण्य ही उनका प्रधान कार्यक्षेत्र था। यहां पर आने के बाद कुछ ही समय में उन्होंने आदिवासी जनता की स्थानीय भाषाओं को सीख लिया। यहां के कार्यकर्ताओं को उन्हीं की भाषा में शिक्षण देती थीं। आम पार्टी सदस्यों को, एरिया कमेटी से लेकर राज्य स्तर के कार्यकर्ताओं तक को उन्होंने कई बार राजनीतिक कक्षाओं में शिक्षण दिया। राजनीतिक अर्थशास्त्र, पार्टी इतिहास, भारत की नई जनवादी क्रांति, महिला परिप्रेक्ष्य आदि कई विषयों पर वह सुचारू रूप से क्लास लेती थीं। कई

कार्यकर्ताओं को राजनीतिक व सैद्धांतिक शिक्षण देने की प्रक्रिया का हिस्सा बनकर उन्होंने दण्डकारण्य के क्रांतिकारी संघर्ष के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शिक्षण के सत्रों के बीच मिलने वाले खाली समय में कामरेड महिता ने दण्डकारण्य के संघर्ष का, खासकर यहां पर विकसित हो रही जन राजसत्ता का नजदीक से अध्ययन करने तथा जमीनी अनुभवों से सीखने का प्रयास किया। सकारात्मक पहलुओं के अलावा, उनकी नजर में आई खामियों और कमजोरियों से भी वह समय–समय पर पार्टी कमेटियों को अवगत करवाती थीं। उन्होंने कई अनमोल सुझाव और निर्माणात्मक विमर्श पेश किए ताकि पार्टी, जनसेना और आंदोलन को मजबूत किया जा सके। अक्टूबर 2011 में आयोजित दण्डकारण्य स्पेशल जोन के प्लीनम में उन्होंने पर्यवेक्षक के रूप में भाग लिया जिसमें उन्होंने दण्डकारण्य संघर्ष के विकास हेतु अनमोल सुझाव दिए। उन्होंने अपने संदेश में अपनी दिली आकांक्षा व्यक्त की कि दण्डकारण्य का आधार इलाके के रूप में विकास हो।

महिता एक पढ़ाकू कामरेड थीं। गुरिल्ला जीवन में उपलब्ध कम समय का सदुपयोग करते हुए वह अपनी शिक्षण–क्षमता, विषयों पर पकड़ और समझदारी की व्यापकता को बढ़ाने की कोशिश करती थीं। सभी से घुलमिल जाते हुए सभी का स्नेह जीतने वाली उत्तम कम्युनिस्ट थीं वह। दुबली–पतली और नाजुक स्वास्थ्य का मुकाबला करते हुए ही उन्होंने पार्टी द्वारा दी गई जिम्मेवारियों को पूरा करने का दृढ़तापूर्वक प्रयास किया। आज शोषक शासक वर्ग और उनके सेवक पुलिस व खुफिया अधिकारी मीडिया के जरिए यह दुष्प्रचार कर रहे हैं कि 'तमाम माओवादी नेता बीमारियों से ग्रस्त होकर पंगु बन चुके हैं'। उनकी कोशिश यह है कि इस तरह माओवादी आंदोलन के भविष्य पर जनता के अंदर भ्रम पैदा करके क्रांति की जीत पर अविश्वास फैलाया जाए। लेकिन बढ़ती उम्र और हमेशा पीछा करने वाली अस्वस्थता की परवाह किए बिना, जनता के बीच और जनता के सुरक्षा कवच में रहते हुए आखिरी सांस तक जनता के हितों को ही सर्वोपरि मानते हुए काम कर चुकी महिता जैसी वीरांगनाओं और वीरयोद्धाओं के आदर्शों और उच्च मूल्यों से सशस्त्र हुई पार्टी जन दुश्मनों के सपनों को चकनाचूर करके ही रहेगी। उनके मनोवैज्ञानिक युद्ध को विफल करके रहेगी।

देश की आबादी के 95 प्रतिशत के दुख–तकलीफों और आंसुओं के लिए जिम्मेदार शोषक शासक वर्गों द्वारा जनता के खिलाफ जारी अन्यायपूर्ण युद्ध आपरेशन ग्रीनहंट के चलते आज क्रांतिकारी आंदोलन वाले इलाकों में जनता को न्यूनतम स्वास्थ्य सुविधाएं मिलना भी दुष्कर हो गया। ऐसे में क्रांतिकारी कार्यकर्ताओं को समय पर इलाज की सुविधाएं मुहैया करवाना तलवार की धार पर चलने के बराबर है। लुटेरे शासक वर्गों द्वारा अपने हितों के मद्देनजर चलाए जा रहे इस फासीवादी हमले से उत्पन्न कठिन परिस्थितियों के चलते ही कामरेड महिता की मृत्यु हुई। अब महिता हमारे बीच नहीं हैं। लेकिन महिता और महिता जैसे हजारों शहीदों द्वारा स्थापित क्रांतिकारी आशय के प्रति समर्पित हजारों कार्यकर्ता और लाखों जन समुदाय मौजूद हैं। सामंतवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीवाद और साम्राज्यवाद को दफनाकर भारत की नई जनवादी क्रांति को सफल बनाने, उसके बाद समाजवाद और साम्यवाद हासिल करने के लिए दृढ़तापूर्वक लड़ना ही उन तमाम शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। दण्डकारण्य का क्रांतिकारी आंदोलन कामरेड महिता की सेवाओं को सदा याद रखेगा। वह आधार इलाके का अपना लक्ष्य हासिल करके रहेगा जो कामरेड महिता का भी सपना था। जोहार कामरेड महिता!

Gudsa Usendi

(गुड्सा उसेण्डी)

प्रवक्ता,

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)